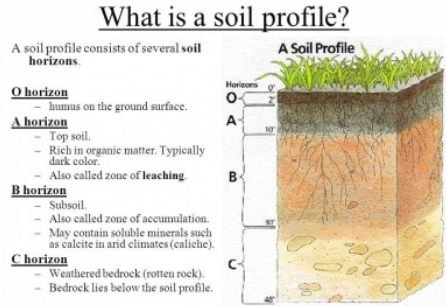




मृदा परिच्छेदिका

drishtiias.com/hindi/printpdf/soil-profile

मृदा की ऊपरी सतह से आधारभूत चट्टान तक के ऊर्ध्वधर काट को 'मृदा परिच्छेदिका' (**Soil Profile**) तथा मृदा की क्षैतिज परतों को 'मृदा संस्तर' कहते हैं।



प्रमुख बिंदु:

- संस्तर की भौतिक और रासायनिक विशेषताओं के आधार पर ही मृदा की पहचान की जाती है, जैसे मृदा के सबसे ऊपरी जैविक परत को 'O संस्तर' कहते हैं।
इन जैविक संस्तरों का निर्माण पौधों एवं जंतुओं से प्राप्त जैविक पदार्थों के संचयन से होता है।
- 'O संस्तर' के नीचे 'A संस्तर' पाया जाता है। इसको कई उपभागों में विभाजित किया जाता है। 'A संस्तर' की जिस परत में ह्यूमस की मात्रा अधिक होती है, उसे 'A1- उपसंस्तर' कहते हैं, जिसका रंग गाढ़ा होने के साथ, पोषक तत्वों की अधिकता के कारण कृषि की दृष्टि से अधिक उपयोगी होता है।
- 'A- संस्तर' के 'A2- उपसंस्तर' में अपवाहन की दर अधिक होने के कारण पोषक तत्वों का अभाव होता है, जिसके कारण 'A2- उपसंस्तर' का रंग हल्का होता है। अतः इसे 'अपवाहन क्षेत्र' (Zone of Illuviation) भी कहते हैं।
- A3, B1 तथा B3- उपसंस्तरों को 'संक्रमण संस्तर' कहते हैं, क्योंकि यहाँ एक साथ दो संस्तरों की विशेषताएँ देखने को मिलती हैं।
- मृदा की सबसे निचली परत को 'C-संस्तर' कहते हैं, जहाँ मृदा निर्माणकारी प्रक्रिया का आंशिक प्रभाव होने के कारण मृदा का पूर्णतः विकास नहीं हो पाता है, लेकिन कालांतर में 'C-संस्तर', 'B संस्तर' में परिवर्तित हो जाता है।
- इसी प्रकार अन्य संस्तरों के परिवर्तन से ही मृदा की मोटाई में वृद्धि होती जाती है।

मृदा का वर्गीकरण:

- **क्षेत्रीय अथवा मंडलीय मृदा-**
इस प्रकार की मृदा उचित जल निकास वाले मूल स्थान पर विकसित एवं वातावरण के साथ साम्यावस्था में होती है।
- **अंतः क्षेत्रीय अथवा अंतः प्रादेशिक मृदा-**
इस प्रकार की मृदा विभिन्न प्रदेशों में बखरी हुई होती है। इस मृदा में जल प्रवाह की व्यवस्था नहीं होती है, जिस कारण से जलाक्रांति की स्थिति बनी रहती है।
- **अक्षेत्रीय मृदा-**
 - इस प्रकार की मृदा का संबंध स्थानीयता से नहीं होता बल्कि अपरदन के कारकों द्वारा परिवहित कर लाई जाती है।
 - इसमें मृदा संस्तरों का पूर्ण विकास नहीं होता है।